शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
Vol. 9, Issue 3, pp (89-96), Month: Sep. 2018

भारत–चीन सम्बन्ध (वर्तमान सन्दर्भ में)

कु0 सोनिया वर्मा
पीएच0डी0 शोध छात्रा
राजनीति विज्ञान विभाग, इस्माईल नेशनल महिला पी0जी0 कॉलिज,
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत
Email: soniya.verma.807@gmail.com

सारांश

*स्वतंत्रता के बाद भारत और चीन के सम्बन्धों की कहानी भारतीय नेताओं की आदर्शवादिता, स्वप्नदर्शिता और अदूरदर्शिता तथा चीनी विश्वासघात की कहानी है। भारत की चीन सम्बन्धी नीति निम्नलिखित तत्वों पर आधारित रही है–**प्रथम**, यह विश्वास था कि प्राचीन काल से ही भारत और चीन के मध्य घनिष्ठ सांस्कृतिक और व्यापारिक सम्बन्ध विद्यमान थे। बौद्ध धर्म जन्मभूमि भारत–चीन का एक प्रकार से धर्म गुरू है और चीन उसका सम्मान करेगा। **दूसरे**, चीन को अपनी स्वतंत्रता और अखण्डता की रक्षा के लिए पाश्चात्य और जापानी साम्राज्यवाद के विरूद्ध एक भीषण और दीर्घ संघर्ष करना पड़ा था। इससे भारत में उसके प्रति गहरी सहानुभूति उत्पन्न हो गयी थी। **तीसरे**, यह माना जाता था कि चीन ने भारत पर कभी आक्रमण नहीं किया है और न कभी करेगा और वह आक्रमण करना भी चाहेगा तो उत्तर की दुर्गम हिमालय पर्वतमाला उसे कभी ऐसा नहीं करने देगी। **चौथे** भारतीय विदेश नीति के प्रधान निर्माता पण्डित नेहरू और उनके विश्वस्त परामर्शदाता रक्षामंत्री कृष्ण मेनन चीन, विशेषतः साम्यवादी चीन के प्रति गहरी सहानुभूति रखते थे और चीन के साथ मैत्री की असंलग्नता की नीति की आधारशिला मानते थे। 2014 के संसदीय चुनाव के बाद अन्तर्राष्ट्रीय मामलों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए प्रधानंत्री ने पिछले एक साल में डेढ़ दर्जन देशों की यात्राएँ की। हमें भारत–चीन संबंधों में इस समय तक परिवर्तनकारी आन्दोलन देखने को मिल रहा है और यह नई ऊर्जा के रूप में परिलक्षित हो रहा है, जिस ऊर्जा से ये दोनों देश संलग्न हैं।*

***मुख्य शब्द**–भारत–चीन सम्बन्ध, विदेश नीति, साम्राज्यवाद, असंलग्नता*

प्रस्तावना

भारत और चीन न केवल पड़ोसी राष्ट्र हैं, अपितु उनमें प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक सम्बन्ध चले आ रहे थे, जिसका इतिहास साक्षी है। जब दोनों विदेशों के अधिपत्य में चले गये तो इनके ये सम्बन्ध टूट गये। 1947 में भारत स्वतन्त्र हुआ और उधर 1949 में कोमिन्तांग सरकार के पतन के बाद चीन में साम्यवादी सरकार की स्थापना हुई। साम्यवादी शासन की स्थापना के

बाद ही यह महसूस किया गया कि चीन के साथ भारत के मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों की स्थापना का मार्ग अनेक कठिनाइयों से भरा हुआ है।

भारत–चीन मैत्री के मार्ग में कठिनाइयाँ

भारत–चीन मैत्री के मार्ग में निम्नलिखित कठिनाइयाँ महसूस की गयीं– **प्रथम**, भारत की राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्थाएँ तथा संस्थाएँ चीनी साम्यवादी प्रणाली और उसकी संस्थाओं से भिन्न है। **द्वितीय**, भारत की विदेश नीति शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व एवं पंचशील के सिद्धान्तों पर आधारित है। दूसरी ओर साम्यवादी चीन के इरादे आक्रामक, साम्रज्यवादी और विस्तारवादी है। इसकी इच्छाएँ एशिया में एकाधिकार की हैं और उसके साधन तोड़–फोड़, आतंक, क्रान्ति, कपट और हिंसा है। माओं नीति शक्ति को 'बन्दूक की नली' से प्राप्त करती है। **तृतीय**, एशिया में भारत जनसंख्या, शक्ति और प्राकृतिक साधनों में चीन की प्रतिद्वन्द्वी बनने की क्षमता रखता है। चीन को यह पसन्द नहीं है कि भारत उसका प्रतिद्वन्द्वी बने।

भारत–चीन सम्बन्धों का इतिहास

भारत–चीन सम्बन्धों के इतिहास को सुविधा को दृष्टि से तीन भागों में बाँटा जा सकता है–

(1) भारत–चीन सम्बन्ध–प्रमोद काल

(2) भारत–चीन सम्बन्ध–टकराव और तनाव का काल

(3) भारत–चीन सम्बन्ध–संवाद काल (1949–57)

(1) भारत–चीन सम्बन्ध–प्रमोद काल– चीन के प्रति भारत का दृष्टिकोण प्रारम्भ से ही मित्रतापूर्ण रहा है। हमारे स्वतंत्रता संग्राम के दिनों से ही नेहरू भारत और चीन की मित्रता पर बल देते रहे थे। सन् 1942 में च्यांग काई शेक ने भारत की यात्रा की थी, जिससे भारत में चीन के जापानी साम्राज्यवाद के विरूद्ध संघर्ष के प्रति सहानुभूति की एक लहर फैल गयी। चीन में साम्यवादी दल को विजय के बाद भारत–चीन सम्बन्ध और भी घनिष्ठ हो गये। अक्टूबर 1949 में चीन में साम्यवादी क्रान्ति का भारत ने स्वागत किया। गैर–साम्यवादी देशों में भारत ही पहला देष था जिसने चीन को राजनयिक मान्यता प्रदान की। अमरीका की नाराजगी की कीमत पर भी भारत ने कोरियाई युद्ध में चीन का समर्थन किया। यू0एन0ओ0 में भारत ने उस प्रस्ताव का विरोध किया, जिसमें चीन को आक्रान्ता घोषित किया गया था। सितम्बर 1950 में सेनफ्रांसिस्को में 49 राष्ट्रों के साथ होने वाली जापानी सन्धि में भारत इसलिए शामिल नहीं हुआ, क्योंकि चीन को उसमें शामिल नहीं किया गया था। संयुक्त राष्ट्र संघ में चीन को मान्यता दिलाने का भारत ने भरसक प्रयत्न किया।

सन् 1954–57 का काल भारत चीन सम्बन्धों में प्रमोद काल कहलाता है। 29 जून 1954 को दोनों राष्ट्रों के मध्य एक 8 वर्षीय व्यापारिक समझौता हुआ, जिसके अन्तर्गत भारत ने तिब्बत से अपने 'अतिरिक्त देशीय अधिकारों' को चीन को सौंप दिया। इस व्यापारिक समझौते की प्रस्तावना में ही पंचशील के सिद्धान्तों की रचना की गयी थी। जून 1954 में जब चीन के तत्कालीन प्रधानमंत्री चाऊ–एन– लाई भारत आये तो संयुक्त विज्ञप्ति में पंचशील के सिद्धान्तों

पर बल दिया गया। अक्टूबर 1954 में पण्डित नेहरू ने भी चीन की यात्रा की। अप्रैल 1955 में बाण्डुंग सम्मेलन में नेहरू और चाऊ–एन–लाई ने पूर्ण सहयोग के साथ कार्य किया। **पामर** के शब्दों में, "साम्यवादी चीन के प्रति नेहरू और उनके सहयोगियों का दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से तुष्टिकारी था।"

(2) भारत–चीन सम्बन्ध–टकराव और तनाव का काल–पंचशील और बाण्डुंग सम्मेलन को भारतीय कूटनीति की महान सफलताएँ माना गया था, परन्तु वस्तुतः वे भारतीय कूटनीति की पराजय सिद्ध हुए। भारत और चीन के प्राचीन सम्बन्धों की घनिष्ठता को अत्यधिक बढ़ा–चढ़ाकर देखा गया था। साम्रज्यवाद के विरूद्ध उसके संघर्श के प्रति सहानुभूति के प्रवाह में बहकर यह भुला दिया गया था कि चीनी लोग प्राचीनकाल से ही चीन को विश्व सभ्यता का केन्द्र मानते आये हैं ओर एक विस्तारवादी नीति में विश्वास करते रहे हैं। भारत पर उनके भूतकाल में आक्रमण न करने का कारण उनकी शान्तिप्रिय नहीं वरन् हिमालय की दुर्गम पर्वतमालाएँ थीं। परन्तु 20वीं शताब्दी में एक ओर तो विज्ञान की प्रगति ने उनकी अगयता को काफी कम कर दिया और दसूरी ओर तिब्बत की चीन को सौंप देने की गलती कर भारत ने भारत पर चीन के हमले को सरल बना दिया। इसके अतिरिक्त भारतीय विदेश नीति के निर्माता यह भूल गये कि द्वितीय विश्व–युद्ध के पश्चात् एशिया और अफ्रीका के जागरण से उत्पन्न हुई। परिस्थतियों में भारत और चीन के मध्य एशिया और अक्रीका विशेषतः दक्षिणी–पूर्वी एशिया के नेतृत्व के लिए संघर्ष होना अनिवार्य ही था।

तिब्बत समस्या–तिब्बत भारत का पड़ौसी राज्य है। इसके उत्तर में चीनी सिक्यांग स्थित है। भारत को अंग्रेजों से तिब्बत के सम्बन्ध में निम्न अधिकार उत्तराधिकार में मिलें–

(1) ल्हासा में एक भारतीय राजनीति एजेण्ट रख सकना,
(2) ग्यान्तसे, गंगटोक और यातुंग में व्यापारिक एजेन्सी स्थापित रख सकना,
(3) ग्यान्तसे के व्यापार मार्ग पर डाक एवं तार के दफ्तर रखना तथा
(4) ग्यान्तसे में एक छोटा–सा सैनिक दस्ता रखना जो व्यापार मार्ग की रक्षा कर सके।

चीन सदियों से तिब्बत पर अपना अधिकार जताता आ रहा था। चीन की नयी साम्यवादी सरकार ने स्थापना के साथ ही तिब्बत पर अपना अधिकार घोषित कर दिया और तिब्बत को अपने राज्य का अंग बताया। 1 जनवरी 1950 को चीन सरकार ने तिब्बत को स्वतंत्र कराने की घोषणा कर दी। भारत सरकार ने चीन से वार्ता कर लेना ही उचित समझा। दिसम्बर 1953 में यह वार्ता प्रारम्भ हुई। पंचशील के आधार पर एक समझौता दोनों देशों के बीच कर लिया गया। इसके अंतर्गत भारत को तिब्बत में व्यापार एजेन्सियाँ स्थापित करने का और तीर्थ–यात्राओं तथा अन्य नागरिकों द्वारा तिब्बत की यात्रा कर सकना मुख्य रूप से निश्चित किया गया। भारत सरकार यातुंग एवं ग्यान्तसे में अपने सैनिक हटाने के लिए सहमत हो गयी।

भारत–चीन सीमा विवाद

दूसरी तरफ भारत और चीन के मध्य सीमा को लेकर कटु विवाद प्रारम्भ हो चुका था।

1950–51 में साम्यवादी चीन के नक्शे में भारत के बड़े भाग को चीन का अंग दिखाया गया था। जब भारत सरकार ने चीन का ध्यान इस ओर दिलाया तो यह कहकर मामला टाल दिया गया कि ये नक्शे कोमिन्तांग सरकार के पुराने नक्शे हैं। चीन की नयी सरकार को इतना समय नहीं मिला कि वह इनमें उपयुक्त संशोधन कर सकें। समय मिलते ही इन नक्शों को ठीक कर दिया जाएगा। जून, 1954 में भारत एवं चीन के मध्य तिब्बत को लेकर समझौता हुआ तब वार्ता हेतु चुने गये विषयों में सीमा–विवाद का कहीं प्रश्न ही न था। भारत में समझा गया कि समस्त विवाद हल हो चुके हैं। परन्तु शीघ्र ही 17 जुलाई, 1954 को चीन ने एक पत्र द्वारा भारत पर आरोप लगाया कि भारतीय सेना ने बूजे नामक चीनी स्थान पर अवैध अधिकार कर लिया है। बूजे भारत में बड़ाहोती के नाम से प्रसिद्ध था। चीन के विरोध–पत्र का उत्तर देते हुए भारत सरकार ने लिख दिया कि, "यह स्थान भारतीय प्रदेश में है और यहां भारतीय सीमा सुरक्षा सेना की चौकी है।

भारत पर चीन का आक्रमण

अकटूबर 1962 में भारत पर साम्यवादी चीन ने बड़े पैमाने पर आक्रमण कर दिया। इससे पूर्व 12 जुलाई, 1962 को लद्दाख में गलवान नदी की घाटी की भारतीय चौकी को चीनियों ने अपने घेरे में लिया। 18 सितम्बर को चीनी सेनाओं ने मेकमोहन रेखा पार करके भारतीय सीमा में प्रवेश किया। 20 अक्टूबर, 1962 को चीनी सेनाओं में उत्तर–पूर्वी सीमान्त तथा लद्दाख के मोर्चे पर एक साथ बड़े पैमाने पर आक्रमण किया। 21 नवम्बर, 1962 को चीन ने एकाएक अपनी ओर से एकपक्षीय कुछ विराम की घोषणा कर दी और युद्ध समाप्त हो गया।

चीन द्वारा भारत पर आक्रमण के कारण

संक्षेप में, चीन द्वारा भारत पर आक्रमण के निम्नलिखित कारण थे–

(1) चीन विस्तारवाद की नीति का प्रदर्शन करना चाहता था।

(2) चीन की इच्छा थी कि वह भारत को लोकतन्त्रात्मक पद्धति से उन्नति में सफल न होने दें, उस पर युद्ध का बोझ डाल दे।

(3) उसका उद्देश्य भारत को बदनाम करना था, एशिया में चीन को सर्वोच्च बनने की आकांक्षा तथा भारत को नीचा दिखाने की इच्छा थी।

चीन के एक–पक्षीय युद्ध–विराम के कारण

चीन ने एक–पक्षीय युद्ध विराम की घोषणा करके सबको स्तब्ध कर दिया। मौटे तौर से निम्नलिखित कारण हो सकते हैं–

(1) चीन अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अपनी सद्भावना प्रकट करना चाहता था, कि चीन युद्ध प्रेमी नहीं बल्कि उसे बाध्य होकर लड़ाई लड़नी पड़ी थी।

(2) सैनिक दृष्टि से चीन ने भारत को हराकर भारतीय प्रतिष्ठा को धूल में मिला दिया और भारत की निर्बलता जग–प्रसिद्ध हो गयी थी।

भारत की पराजय के कारण

इस युद्ध में भारत की पराजय के निम्नलिखित कारण हैं–

(1) भौगोलिक स्थिति चीन के पक्ष में थी। चीनी, तिब्बत के ऊँचे पठार तथा चोटियों से आक्रमण करते थे, जबकि भारतीय को निचली घाटियों से हिमालय की ऊँची चोटियों तक चढ़कर अपने मोर्चे की रक्षा करने का कठिन काम करना पड़ा।

(2) चीनियों ने इस युद्ध की तैयारी बहुत समय पूर्व से कर रखी थी जबकि भारत इसके तैयार ही न था।

कोलम्बो प्रस्ताव

भारत और चीन के इस युद्ध में एषिया और अफ्रीका के कुछ मित्र–राज्यों ने दोनों देशों के सीमा–विवाद को हल करवाना चाहा। इन देशों ने श्रीलंका की राजधानी कोलम्बों में 10 दिसम्बर से 2 दिसम्बर 1962 तक एक सम्मेलन किया। इस सम्मेलन में वर्मा, कम्बोडिया, श्रीलंका, घाना, इण्डोनेशिया तथा संयुक्त अरब गणराज्य के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। भारत ने इस प्रस्ताव के बारे में कोई स्पष्ट प्रक्रिया व्यक्त नहीं की। कोलम्बों प्रस्ताव के पाँच सूत्र इस प्रकार हैं–

(1) वर्तमान नियन्त्रण रेखा भारत–चीन विवाद के समाधान का आधार मानी जाय।

(2) (अ) पश्चिमी क्षेत्र में चीन वर्तमान रेखा से 20 किलोमीटर पीछे अपनी सैनिक चोटियाँ हटा लें, (ब) भारत इस क्षेत्र में अपनी वर्तमान स्थिति को बनाये रखें तथा (स) समस्या के अन्तिम समाधान होने तक भारत और चीन इस देश को विसैन्यीकृत रखें और इस क्षेत्र का निरीक्षण दोनों देषों के असैनिक अधिकारी करें।

(3) पूर्वी क्षेत्र में वर्तमान नियंत्रण रेखा को युद्ध विराम रेखा माना जाये।

(4) मध्य क्षेत्र में सीमा का निश्चय शान्तिपूर्ण साधनों से किया जाये

(5) इन प्रस्तावों की स्वीकृति से दोनों देषों के बीच परस्पर वार्ता के द्वारा निर्णय ले सकते हैं।

(3) भारत–चीन सम्बन्ध–संवाद काल (1978–2011)–भारत में जनता सरकार के सत्तारूढ़ होने और चीन में माओत्तर नेताओं द्वारा बागडोर संभाले जाने के बाद दोनों देशों ने विगत् बातों को भूलकर नये सिरे से मुधर सम्बन्ध स्थापित करने की दिशा में प्रयास किये। अनेक कूटनीतिक माध्यमों से भारत को पीकिंग से इस बात के संकेत मिले कि वह भारत के साथ सम्बन्ध सुधारने का इच्छुक है। चीन भारत की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाने के लिए अनेक आन्तरिक और बाह्य कारणों से विवश है। चीन में ऐसे आसार दिखायी दे रहे हैं कि पुराने माओवादी रवैये से हटकर कुछ नये विकल्पों को आजमाया जाये। चीन ने अपनी विदेश नीति के क्षेत्र में भी पुनर्विचार करना आवश्यक समझा। चीन जानता है कि भारत प्रभाव– क्षेत्र की राजनीतिक और महाशक्तियों के प्रसार का विरोधी है, इसलिए भारत के साथ मिलकर ही एक सक्षम एशियाई व्यक्तित्व का निर्माण हो सकता है, जिससे कि एशिया में बड़ी शक्तियों के प्रसार और प्रतिस्पर्द्धा को रोका जा सकता है। इसलिए भारत के साथ सम्बन्धों को सुधारने की कार्यवाही चीन के राष्ट्रहित में है।

भारत चीन संबंध : वर्तमान में बदलते रिश्ते

2014 के संसदीय चुनावों के बाद नई दिल्ली में सशक्त पड़ौसी देशों सहित अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को यह संकेत दिया कि भारत को गंभीरता से लेने का वक्त अब आ चुका है। अन्तर्राष्ट्रीय मामलों के प्रति अपनी व्यक्तिगत प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए प्रधानमंत्री ने पिछले एक साल में दिल्ली में कई महत्त्वपूर्ण नेताओं की मेजबानी करने के अलावा, करीब डेढ़, दर्जन देशों की यात्राएँ भी की। इस प्रक्रिया में हमें भारत–चीन संबंधों में इस समय एक परिवर्तनकारी आन्दोलन देखने को मिल रहा है और यह उस नई ऊर्जा, उत्साह और रचनात्मक तरीके में परिलक्षित हो रहा है जिस ऊर्जा और उत्साह से ये दोनों देश संलग्न हो रहे हैं। एषिया की इन दो महाशक्तियों के नेताओं ने पिछले 9 महीनों में एक–दूसरे के देशों की यात्राएँ की हैं, यह इस बात का संकेत हैं कि दोनों ही देश आपसी सहयोग में इस सदी को एशिया की सदी बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।

ऐसा भी पहली बार हुआ था कि भारत और चीन के नेताओं ने एक दूसरे के देशों में अपनी यात्राएँ राष्ट्रीय राजधानी से शुरू न करते हुए राज्यों की राजधानी से की और इस प्रकार उभरते चीन–भारत संबंधों में गृह नगर कूटनीति की एक नई रूपरेखा का निर्माण किया। इसने द्विपक्षीय संबंधों को नियमित कूटनीति से इतर संबंधों की गर्माहट पर जोर दिया है और दिल और दिमाग के तार भी व्यक्तिगत तौर पर जोड़े हैं। 15 मई, 2015 को दिया गया संयुक्त व्यक्तव्य भारत और चीन को क्षेत्र की दो प्रमुख महाशक्तियों के रूप में बताता है जो एशियाई सदी और इक्कीसवीं शताब्दी के भू–राजनीतिक आर्थिक परिदृश्य पर अपनी छाप छोड़ेगी। दो विशाल उभरते विकासशील देशों दो सबसे तेज उभरती अर्थव्यवस्थाओं और वैश्विक वास्तु में दो ध्रुवों के बीच संबंधों का संरचनात्मक मॉडल अन्तर्राष्ट्रीय प्रणाली को मजबूत करने के लिए राज्य से राज्य संबंधों के लिए एक नया आधार प्रस्तुत करता है।

यात्रा के दौरान दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों ने एक 41 बिन्दु वाले संयुक्त वक्तव्य पर हस्ताक्षर किये जिसके महत्त्वपूर्ण बिन्दु निम्नलिखित हैं–

(1) दोनों देशों के बीच राजनीतिक संवाद तथा सामरिक संरचना को मजबूत बनाना एवं सीमा पर शांति व स्थिरता बनाए रखने का प्रयास करना।

(2) विकास साझेदारी के विस्तार पर बल दिया। इसके लिए दोनों देशों ने व्यापार व निवेश को बढ़ाने पर विचार–विमर्श व तालमेल को बढ़ाने तथा वर्तमान में चल रही सामरिक आर्थिक वार्ताओं का दायरा बढ़ाने पर सहमति व्यक्त की।

(3) सांस्कृतिक आदान–प्रदान तथा जनता से जनता के बीच सम्पर्क बढ़ाना। दोनों देशों ने थिंक टैंक फोरम की स्थापना का निर्णय लिया है जिसके द्वारा दोनों के बुद्धिजीवी विभिन्न विषयों पर विचारों का आदान–प्रदान कर सकेंगे।

(4) सहयोग के नए क्षेत्र कौशल विकास, अन्तरिक्ष तथा परमाणु ऊर्जा का शांतिपूर्ण उपयोग, स्मार्ट शहरों का विकास, लोक स्वास्थ्य, परम्परागत चिकित्सा तथा चिकित्सा शिक्षा, अन्तरिक्ष विज्ञान तथा दोनों देशों की कानून व्यवस्था एजेंसियों में सहयोग आदि प्रमुख हैं।

भारत में चीन के सम्बन्धों का सार यह है कि यद्यपि दोनों देशों ने गत दो दशकों में आर्थिक व अन्य क्षेत्रों में सम्बन्धों का तेजी से विस्तार किया है, लेकिन सामरिक मामलों में अविश्वास व तनाव का माहौल कम नहीं हुआ है। जटिल सीमा विवाद के बीच सीमा पर चीनी सैनिकों के घुसपैठ की घटनाएँ कम नहीं हुई हैं। भारत के विरोध के बावजूद चीन अरूणाचल प्रदेश के नागरिकों को अब भी नत्थी वीजा ही जारी कर रहा है। चीन अरूणाचल प्रदेश में भारत के प्रधानमंत्री के जाने का विरोध करता है, दूसरी तरफ वह अपने कृत्यों से भारत के हिस्से वाले कष्मीर को तो विवादास्पद क्षेत्र मानता है, वहीं पाकिस्तान के कब्जे वाले हिस्से को पाकिस्तान का हिस्सा मानता है। इसका प्रमाण यह है कि अप्रैल 2015 में चीन के राष्ट्रपति की पाकिस्तान यात्रा के दौरान दोनों देशों में 48 बिलियन चीनी निवेष की मदद से चीन पाकिस्तान आर्थिक गलियारे की स्थापना का समझौता किया गया है। इस गलियारे में सड़कों रेल लाइनों के साथ–साथ अन्य सुविधाओं का विकास किया जाएगा। यह गलियारे पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर होते हुए चीन के पूर्वी झिंगझियांग प्रान्त के शहर काषगर को पाकिस्तान के ग्वादर बन्दरगाह को जोड़ेगा। कानूनी दृष्टि से चीन पाक अधिकृत कश्मीर के विवादास्पद क्षेत्र पर इस गलियारे का निर्माण नहीं कर सकता लेकिन चीन ने भारत के इस विरोध को नजरअंदाज कर दिया है। चीन–पाक सामरिक गठजोड़ भारत के लिए चिन्ता का विषय है। पाकिस्तान का परमाणु हथियार तथा मिसाइल कार्यक्रम चीन की सहायता से ही चल रहा है तथा दोनों देश एक–दूसरे को हर मौसम का दोस्त भी मानते हैं। इतना ही नहीं चीन की 21वीं शताब्दी मैरी टाइम शिल्क रूट परियोजना भी चीन द्वारा भारत को घेरने की पूर्व नीति का संशोधित संस्करण है। 2014 में घोषित इस परियोजना में चीन द्वारा हिन्द महासागर स्थित भारत के पड़ौसी देशों में बन्दरगाह तथा अन्य ढांचागत सुविधाओं का विकास किया। इससे दक्षिण एशिया में चीन के सामरिक प्रभाव में वृद्धि होगी।

निष्कर्ष

चीनी राष्ट्रपति की भारत यात्रा, विदेश सचिव की चीनी यात्रा, भारतीय प्रधानमंत्री की चीन यात्रा हमें अपने इस ताकतवर पड़ौसी से बराबरी के स्तर पर बात करने का मौका देती है। हालांकि चीन के साथ कई अहम मुद्दे अभी भी विवादित हैं, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि कूटनीति में विवादों का समाधान तुरन्त नहीं होता। चीन के साथ विवाद सुलझाने में समय लगेगा, किन्तु मोदी की पहल इस दिशा में सकारात्मक कदम है। आर्थिक लाभ की दृष्टि से देखे तो मोदी के शासन काल में विदेशी निवेश के दरवाजे खुले हैं। सबसे सृजनात्मक योगदान हालांकि सबसे महत्त्वपूर्ण चेतावनी के साथ आया कि भारत और चीन के रिश्तों के सामर्थ्य का सही फलन और शांतिपूर्ण एशिया की सदी का वादा तब ही संभव है जब दोनों देश एक दूसरे की चिंताओं हितों और आकांक्षाओं को आपसी सम्मान और संवेदनशीलता से ख्याल रखें। असंतोष होते हुए भी इन दोनों देशों ने सकारात्मक होना उचित समझा और दोनों ही देशों के लिए उचित प्रतिभागिता के फलक को चौड़ा करते हुए आर्थिक अवसरों पर ध्यान देना उचित समझा। यह भारत और चीन के बीच विविध क्षेत्रों में हुए 24 समझौतों में परिलक्षित होता है। जिनमें आधारभूत संरचना, स्मार्ट

सिटीज, रेलवेज, सिकल डेवलपमेंट, स्पेस और पर्यावरण परिवर्तन जैसे क्षेत्र हैं। दोनों पखों ने कूटनीतिक वार्तालाप बढ़ाने हेतु चीन के चेंगुडु और भारत के चेन्नई नगरों में एक–एक कांसुलेट खोले जाने का निर्णय लिया है। सभी मामलों में भू–राजनीति ओर भू–अर्थ व्यवस्था आने वाले महीनों और दशकों में भारत और चीन के संबंधों के नए आयाम तय करेगी पर अभी आर्थिक परिदृश्य ही है जो गहन निवेश और व्यापार के माध्यम से समृद्धि के क्षेत्र में एशिया की दो महाशक्तियों को नजदीक ला रहा है।

सन्दर्भ

1 फड़िया बी0 एल0, *'अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति'* साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, 2013, पृ0सं0 **295**

2 फड़िया बी0 एल0, *'अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति'* साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, 2013, पृ0सं0 **296**

3 फड़िया बी0 एल0, *'अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति'* साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, 2013, पृ0सं0 **298**

4 वहीं, पृ0सं0 **299**

5 शर्मा डॉ0 प्रभुदत्त, *'विदेश–नीतियाँ'* (सिद्धान्त एवं व्यवहार) कॉलेज बुक डिपो, त्रिपोलिया, जयपुर, 2010, पृ0सं0 **193**

6 वहीं, पृ0सं0 **194**

7 पंत पुष्पेश, *'21वीं शताब्दी में अन्तर्राष्ट्रीय संबंध'* McGraw Hill Education (India) Private Limited New Delhi, 2015 पृ0सं0 VIII **57**

8 सिंह डॉ0 एस0सी0, *'अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति'* लक्ष्मी नारायण अग्रवाल 2013–14, पृ0सं0 **322**

9 वहीं पृ0सं0 **323**

10 *भारतीय राजनीति विज्ञान* शोध पत्रिका जनवरी जून, 2016 पृ0सं0 **148**

11 *भारतीय राजनीति विज्ञान* शोध पत्रिका जनवरी जून, 2016, पृ0सं0 **149**

12 वहीं, पृ0सं0 **150**